



महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष 14, अंक-10 शनिवार, 26 सितं. '91	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी अक्तूबर, 1991	वार्षिक चन्दा-10.00 प्रति अंक : 1.00
---	---	---

आओ, हम 'योगी शताब्दी' मनायें.....

[योगी शताब्दी का मंगल वर्ष आ रहा है.....

तो, प.पू. काकाश्री द्वारा स्वयं के हीरक महोत्सव (60वीं जन्म जयंती) पर हमें पूछे नीचे के चार प्रश्नों पर सतत् चौकन्नी निगाह रखकर भीतर से टटोलें....

और सुरुचि रखकर उसके मुताबिक वर्तने लग पड़े।

यही हमने सच्ची योगी शताब्दी मनाई मानी जाएगी।

महाराज, स्वामी, ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज, ब्र. स्व. योगीजी महाराज, गुरुहरि काकाजी महाराज और, प्रत्यक्ष स्वरूपों इस हेतु हमें खूब बल दें—यही प्रार्थना !]

“व्यवहारिक बुद्धि छोड़ कर—सचमुच,

- ☐ योगीजी महाराज को जो कराना था उसके लिए हम तैयार (तत्पर) हैं?
- ☐ योगीजी महाराज का जो अभिप्राय था—जो भावना थी—वह हमारे दिल में अखंड रहती हैं?
- ☐ योगीजी महाराज की जो योजना थी कि पाँच पचास-दौ सौ जनों को तैयार करना—उसके लिए चौबीस घंटे में से एक घंटा दिल की सच्चाई से हमारा प्रयत्न (कोशिश) है?
- ☐ अन्दर-अन्दर दूसरों को उपदेश करते हैं—परामर्श देते हैं, पर वही स्वयं पर लागू करके हम वर्त पाते हैं?

—ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज

मंगलमय दिवाली.....

सदा दिव्य साकार स्वरूप प.पू. पप्पाजी का अमृत महोत्सव व योगी शताब्दी का नूतन प्रभात अर्थात् अज्ञान के अंधकार में से, ज्ञान के प्रज्ज्वलित दीप लेकर, मानव में से महामानव बनने की नई प्रेरणा लेकर उमंग व उत्साह के साथ दिवाली आ गई.....

परोक्ष व प्रत्यक्ष के उपासकों की दिवाली में खूब फर्क है....सामान्य जगत में, परोक्ष के उपासकों की दिवाली घर की सफाई, नए बही खाते बनाने, दीप जलाने व मिठाई लाकर धूप-बत्ती जलाकर पूजन करने में चली जाती है, जबकि प्रत्यक्ष के उपासकों को तो प्रत्यक्ष स्वरूप के साथ रहते हुए हर सुबह दिवाली व हर सुबह नया वर्ष अर्थात् नित्य नवीन लीला का दर्शन, नित्य नए अनुभव !

प्रत्यक्ष के उपासकों की—‘भक्त’ की पहचान क्या ? प्रत्यक्ष के ऐसे भक्त हृदय उपासक को उदासी उलझन, विक्षेप, अभाव, अशांति होती ही नहीं, वह तो स्वयं को मिले स्वरूप की मूर्ति की स्मृति में, अद्भुत प्राप्ति की मस्ती में व आनन्द में 24 घंटे एक अनोखी शांति अनुभव करता है....प्रत्यक्ष धाम, धामी और मुक्तों को दिव्य मानकर एकमात्र प्रत्यक्ष स्वरूप को राजी कर लेने के भरपूर प्रयत्न में लगा ही रहता है.....चाहे कैसी भी विपरीत परिस्थितियाँ, प्रसंग, देशकाल उसकी निष्ठा को रंचमात्र डिगा नहीं पाता....मेरी पल-पल की क्रिया का प्रेरक, प्रवर्तक, कर्ता-हर्ता, नियंता सर्वोपरि, साकार, दिव्य मानव स्वरूप में मुझे मिला स्वरूप ही है—ऐसा दिल से मानता है। हम सोचें—हम सच में प्रत्यक्ष के उपासक हैं ?

सही अर्थ में प्रत्यक्ष के उपासक बनने में बाधारूप—हम सभी के मन, इन्द्रियाँ, अन्तःकरण अर्थात् काम, क्रोध, वासना, ईर्ष्या, मत्सर, अहंता,

ममता इत्यादि 51 देवताओं के centres हैं। हरेक देवता की अलग-अलग मान्यता, ग्रन्थि व मूल्यांकन है। दिन में कई बार कहीं न कहीं—कभी मान की ग्रन्थि में कभी हठ की ग्रन्थि में, कभी ईर्ष्या की आग में, कभी मोह-ममता के जाल में फँसकर हम अनेक बंधनों में जकड़े ही जाते हैं। उससे हमें लगता है कि चारों ओर केवल अंधकार ही अंधकार है। भीतर का अंधेरा इतना अधिक गहरा होता है कि बाहर का उजाला भी काला ही दिखाई पड़ता है। पर अगर उसी समय अपने गुरुहरि की स्मृति करके ‘महिमा’ रूपी दिया जला लें, तो उसी समय ‘दिवाली’ ! अपने मन में जितना ज्यादा महिमा का दीया प्रज्ज्वलित रखेंगे उतना अधिक ‘नित्य दिवाली’ ‘नित्य नया वर्ष’ का अनुभव करेंगे। 24 घंटे दिवाली व अखंड नया वर्ष....प्रत्यक्ष स्वरूप की मूर्ति की निरन्तर स्मृति, महिमा के विचारों में रहने से जीवन में कभी भी होली आने का प्रश्न ही नहीं रहेगा। आज सभी को सुखी होने की इच्छा है। वास्तव में प्रभु रखे निर्मल पवित्र संत का समागम केवल मन, इन्द्रियाँ, अंतःकरण के घोड़े की लगाम प्रभु प्रगटायें संत के हाथों में सौंप देनी है।

प.पू. काकाजी के मुख से कई बार हमने सुना था “कुछ नया करके दिखाना है।” हठ, मान, ईर्ष्या, बराबरी, मेरा-तेरा, फलां ऐसा—ढीकना वैसा आदि छोड़कर प.पू.काकाजी ने जो हमें सरल रास्ता बताया था कि “विरोध प्रकृति वाले के साथ मैत्री कर लो, विरोध प्रकृति वाले के स्वभाव जँचा लो तो अत्यधिक परेशान करने वाले स्वभाव कहाँ टल जाएंगे वह पता भी नहीं चलेगा।” हमारी हाँ में हाँ करने वाले तो हमें जँचेंगे ही, पर हमारा विरोध करने वालों में, हमारी बात काटने वालों में, हमारा अपमान करने वालों में हँस की दृष्टि से हरेक का गुण ही देखने

की सुरुचि रखकर प्रत्यक्ष स्वरूप की प्रसन्नता पा लेने की तमन्ना रखेंगे तो हमारा आनन्द त्रिकाल में भी नहीं जायेगा, जीवन हल्का फूल जैसा लगेगा।

तो, आइये, दिवाली व नये वर्ष पर नई उमंग के साथ दृढ़ संकल्प करें कि इस पूरे वर्ष विरोध प्रकृति वाले मुक्तों के स्वभाव जँचाने की कोशिश करेंगे.....इस निमित्त सुबह 15 मिनट और शाम

को 15 मिनट अचूक जपयज्ञ करें। प.पू. काकाजी के शब्दों में—“**सुबह और शाम अपनी बैटरी charge कर लो। तो केवल प्रकाश ही प्रकाश-अंधकार आएगा ही कहाँ से?**” हमारी आत्मा में शाश्वत प्रकाश का दीप जले वही प्रगट के भक्तों की ‘दिवाली’ है।



अमृतनिधि प.पू. पप्पाजी.....

युवानों के जीवनप्राण, बालकों के पिता, वृद्धों के प्यारे, साधकों के स्वामी, ज्ञानियों-योगियों के ब्रह्म, भक्तों के भगवान—नित्य जो नवीन, नित्य जो अलग, नित्य जो उत्साही, नित्य जो प्रेरणादायक..... ऐसे हमारे प्रभु गुरुहरि प.पू. पप्पाजी का अमृत पर्व....अहो हो ! उमंग उत्साह से झूमने का आनन्दकारी दिन.....भक्ति अदा करके मूर्ति लूटने का दिन.....राख के मूल्य सोना पाने का दिन.... प्रत्यक्ष स्वरूप को राजी करके स्वयं के हृदयाकाश में मूर्ति स्थापित करने का दिन.....

हे पप्पाजी ! आपका अमृतपर्व जैसे-जैसे नजदीक आ रहा है वैसे-वैसे एक ही विचार निरन्तर हृदय पट पर knock (खटखटाता) करता हुआ कहता है कि अहो हो ! मानवस्वरूप में स्वयं प्रभु जीव के लिए गरजु बने.....अक्षरधाम से धरती पर आये.....जीव को अपनी शरण में लिया। इससे भी अधिक जीव को शिव बनाने का संकल्प किया, बदले में कोई अपेक्षा रखे बिना अनथक परिश्रम....कदम-कदम पर पथ-प्रदर्शक बनकर, स्वयं वैसा ही जीकर-काँटों पर पहले स्वयं चले और हमारे लिए फूल ही बिछाये.....देवों को भी

दुर्लभ दर्शन, सेवा, समागम, प्रसाद की अमूल्य मौज दे दी.....अहो हो ! पप्पाजी ! हमारी मायिक, सीमित लेखनी कल्पना से परे आपके इस भव्य स्वरूप की क्या महिमा लिख पायेगी? सबको आनन्दकारी मूर्ति बक्षिश में देने वाला हे दिव्य व निर्दोष पुरुष ! क्या लिखें जो आपने हमारे लिए किया ?

गुरुहरि योगीजी महाराज के अभिप्राय की भक्ति का जब से प.पू. पप्पाजी को पता चला तब से गुरुहरि योगीजी महाराज के कार्य में स्वयं का संकल्प भाव व क्रिया.....सतत् योगीमय दृष्टि और योगीरूप.....ब्रह्म के सम्बन्ध से सब ब्रह्म की मूर्ति.....अडिग ध्येयनिष्ठ ! ‘**मैं जोगी का प्रकाश**’ यह उनका जीवन मन्त्र....निःस्पृही, निःस्वादी, निश्चित, निर्मानी, निर्लिप्त.....स्वयं के सात्त्विक ढाँचे को चूर-चूर होने के समय भी स्थितप्रज्ञ.....आज भी पल-पल स्वयं की ही checking! ‘**मेरी क्रिया योगी के प्रति भक्तिरूप है ?**’ संसार में रहते हुए आदर्श साधु ही नहीं बने बल्कि साक्षात् प्रभु की मूर्ति बने। जैसे बांसुरी का स्वयं का कोई सुर नहीं होता, वादक जैसा राग छेड़ता है वैसा ही सुर

‘बांसुरी’ निकालती है—वैसे ही कैसे भी संजोगों में गुरुहरि योगीजी महाराज ने जो भी राग छेड़ा (संतों का, युवकों का, बहनों के भगवान भजने का) बस उन्हीं की ताल से ताल.....वास्तव में तो यदि प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज की अभिप्राय की भक्ति में स्वयं को न मिटाया होता तो आज धर्म में नई क्रांति—बहनों का एकांतिक धर्म सिद्ध करना—वह एक स्वप्न ही रहता। ‘गुणातीत ज्योत’ में मिलजुल कर रहती 500 बहनें—अरे ! ब्रह्मस्वरूपीणी देवियाँ ही क्या प.पू. पप्पाजी के माहात्म्य का यथार्थ दर्शन नहीं.....?

ऐसे पप्पाजी हरेक के जीवन में प्रवेश करके, सहज ही सम्बन्ध में आये चैतन्य को अपने दिव्य स्पर्श, दिव्य संकल्प से प्रभु में जोड़ देते हैं....दिन-प्रतिदिन इस सम्बन्ध में अतिवृद्धि करा कर—कभी दृष्टि रूप, कभी धब्बा मारकर, कभी स्मित देकर, कभी मौन निःशब्द रहकर..... ! अनोखा गृहस्थ साधु, अनोखा आत्मीय, अतिशय गहन व अतिशय अमाप। जीवों में प्रभु स्थापित करने का कार्य ही केवल प.पू. पप्पाजी ने नहीं किया, बल्कि उसे व्यापक बनाया ! गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. पप्पाजी को भारत बुलाकर हम सब पर अनोखी कृपा करी। हम सबसे इस ब्रह्मांड में सबसे अधिक भाग्यशाली और कौन.....? जो इन ‘गुणातीत’ स्वरूपों की दृष्टि में आ गये।

भीतर में अत्यन्त माहात्म्य, बाहर अतिशय दासत्व-गुणातीत समाज की प्रत्येक पांखुड़ी अर्थात् संतों, युवकों, बहनों, गृहस्थों को एकता व सुहृद्भाव, दिव्यता व आत्मीयता, प्रेम और नम्रता

का अमृत दिया। सम्बन्ध वाले मुक्तों में वे इतने अधिक रसबस हुए कि आज सभी को वे गुरु से मित्र अधिक लगते हैं—हरेक को लगता है ‘पप्पाजी मेरे हैं।’ वास्तव में हमारी आज तक की साधना में श्रम भी उन्होंने ही किया है। वे और अक्षरधाम में विराजमान महाराज एक ही हैं, लेकिन तब भी एक सेवक की अदा से वे जीवन जी रहे हैं।

हे करुणानिधि ! रसघनमूर्ति प.पू. पप्पाजी आप परब्रह्म तत्त्व को स्वयं में अखंड धारकर अमृतस्वरूप हो.....हम सभी ने आपके द्वारा भगवान स्वामिनारायण, गुरुहरि योगीजी महाराज के स्वरूप की यथार्थ महिमा व मूर्ति के सुख का अमृतपान किया है.....आपकी महिमा के बारे में लिखने हमारी मायिक कलम असमर्थ है.....दिल से बस यही उद्गार निकलते हैं—अहो हो ! **नेति, नेति....‘न्याल कर दिया—न्याल कर दिया’**, इसके सिवा कुछ सूझ नहीं पड़ती। आपने तो हमेशा से हम सब पर हर प्रकार की अमृत वर्षा ही की है.....हम अपने मन, बुद्धि, चित्त, अहम् की ग्रन्थियों, जगत की वासनाओं में फंसकर चाहे उस अमृत वर्षा को झेल पाये या नहीं, पर आप तो करुणा करके बरसाते ही रहे.....आपके द्वारा दिए ये पारस के स्पर्श से पारस रूप होने के **‘पारसमणि’ रूप 75 ब्रह्मसूत्र** ही इसका साक्षात् प्रमाण हैं। तो आपके अमृतपर्व पर अन्तर की प्रार्थना कि—आप इस देह में पूर्ण स्वस्थता का स्वास्थ्य लेकर अपने दर्शन, सेवा, समागम, प्रसाद, मूर्ति का सुख चिरकाल तक देते रहना और आपकी नजरों के सामने ही हमारा सब पूरा करा देना—करा देंगे न पप्पाजी?



पारसमणि.....

1. 'हे मेरे नाथ !' मेरे जीवन का प्रत्येक पल आपके ध्यान में ही लगा रहे। आप हर पल मेरे पथ प्रदर्शक बनो और मुझ पर अपना अनुग्रह करते रहो। मुझे अपने पथप्रदर्शन के अन्तर्गत रहने और आचरण करने के लिए अटूट बल देने की कृपा करो।'
रोज सुबह यह प्रार्थना करके ठाकुरजी के पाँव छूकर ही कर्मयोग में जुड़ना।
2. प्रतिदिन नियम से पूजा आरती करें। 'आचारसंहिता' और 'संजीवनी मन्त्र' का पाठ करें और 'उगती प्रभा से.....' भजन प्रतिदिन नियम से गाएं।
3. नित्य आधा घंटा स्वामिनारायण मन्त्र का जाप करते हुए पैदल चलें।
4. शरीर के स्वस्थ रहने के लिए अपने शरीर और आस-पास की स्वच्छता का ध्यान रखें। इससे साधना में मदद मिलेगी।
5. रसोई बनाने और खाना खाने से पहले दोनों समय साबुन से अच्छी तरह हाथ धोने चाहिये।
6. अपने तन, मन और आत्मा को हमेशा स्वस्थ बनाए रखने के लिए अपने दैनिक कार्यक्रम की समय सारिणी बनाएँ।
7. जीवन के हर पल और प्रत्येक अवसर का उपयोग करना चाहिए, क्योंकि बीता हुआ पल वापस नहीं आने वाला है।
8. अपने ध्येय, गुरु और स्वयं के प्रति सच्चा (वफादार) रहना चाहिए।
9. स्वामिनारायण मन्त्र का अखंड जप करते रहना चाहिए।
10. 'हे महाराज ! सामने आने वाले व्यक्ति को जीवनमुक्त मानकर, दिव्यभाव पकड़ रखकर स्वधर्मयुक्त सेवा कर लेने की सतर्कता और सजगता रहे, ऐसा बल मिले उसके लिए मैं तीन मिनट जपयज्ञ कर रहा हूँ—' इस जीवनमन्त्र का सतत् ध्यान रखना चाहिए।
11. महिमा, चाहे वह कहीं से भी मिले, वह गाना—वही सच्चा ज्ञान है, बाकी कोरा अज्ञान ही है।
12. हमेशा मीठी बोली बोलो और व्यवहार में शिष्टता रखो।
13. गुरुहरि और गुरु के चिन्तन में निरन्तर भरे ही रहना चाहिए।
14. चौबीस घंटे साक्षात् की लीला जब तक नहीं मानी जाती, तब तक स्वयं का ही कर लेने की गरज (तान) रखनी।
15. घर के मन्दिर में या मानसिक रूप से प्रभु को भोग लगा कर खाना खाएं।
16. हरेक प्रसंग पर गुण ग्राहक दृष्टि रखो ही।
17. कटु सत्य कहने वाले व्यक्ति को अपना परममित्र मानो और उसकी राय को खुले मन से स्वीकार करो।
18. किसी व्यक्ति, प्रसंग या बात का तुरन्त प्रतिकार नहीं करना चाहिए और अगर ऐसा हो जाए तो ग्यारह बार स्वामिनारायण मन्त्र जपकर प्रायश्चित्त कर लेना चाहिए।
19. हमें क्रोध करना शोभा नहीं देता है। अगर हमें क्रोध आ जाए तो उस मुक्त से माफी माँग लेनी चाहिए।
20. बीते पल को भूल जाओ, भविष्य की चिन्ता मत करो और इस पल को प्रभु के ध्यान में समर्पित करके उसे शाश्वत् बना लो।
21. साधना की सहज प्रगति के लिए एक ब्रह्मसूत्र या एक भजन का चयन करना चाहिए और सच्चाई से उसका पालन करना चाहिए।

22. आनन्द करो !
क्यों ? क्योंकि तुम्हें कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। तुम पर योगीजी की कृपा दृष्टि हो गई और यह सबसे बड़ी लॉटरी है, जो तुमने जीत ली।
23. आलस, प्रमाद और लापरवाही छोड़कर अपने ध्येय के बारे में सजग और सतर्क रहो।
24. प्रभु को प्रसन्न करने की शुद्ध भावना से तुम्हें सौंपी हुई सेवा को स्पष्टता, सजगता और पूरी लगन से करो।
25. आप अपने विचार जरूर कह सकते हैं, लेकिन उसे दूसरों पर थोपने का दुराग्रह नहीं करना चाहिए।
26. जीवन में गुरुहरि के वचन को सर्वोपरि मानकर उसे प्रथम स्थान देना चाहिए।
27. 'मैं प्रभु, कर्म और भाव' इनको ही ध्यान में रखकर अपने ध्येय की तरफ एकचित्त होकर आगे बढ़ो।
28. सच-झूठ, न्याय-अन्याय और उचित-अनुचित के सांसारिक मूल्यांकनों से मुक्त और प्रभु की परम भक्ति से भरा हुआ मन ही "नीरव" मन होता है।
29. रोज रात को 'आखा दिवस मां.....' भजन के अनुसार अपने दिन भर के कार्यों की छानबीन करके 'मारे नित नव वर्ष.....' भजन गाकर प्रभु का स्मरण करके सो जाँ।
30. प्रभु की दिव्य शक्ति के सम्बन्ध में हुए अपने अनुभवों को अपनी डायरी में लिखना चाहिए।
31. यदि अपनी भूल को स्वीकार किया है, तो यह दृढ़ निश्चय करो कि वैसी भूल फिर कभी न हो। यह दृढ़ निश्चय ही साधना में प्रवृत्त होने का मार्ग है।
32. उदासी, व्याकुलता और घृणा से तीन से पाँच मिनट तक में मुक्त होने का प्रयास करना चाहिए।
33. किसी के साथ वैर या घृणा भाव नहीं रखना चाहिए।
34. 'वचनामृत', 'स्वामी की बातें' और 'अनुपम 5, 6, 7' का नियमित स्वाध्याय और चिन्तन करना चाहिए।
35. एकाग्रचित्त होकर 15 मिनट 'स्वामिनारायण मन्त्र' की धून्य करने से तुम्हारे सभी मनोरथ सिद्ध होंगे।
36. यदि तुम्हारे मन में किसी 'मुक्त' के लिए कोई दुर्भावना पैदा हुई है, तो मानसिक रूप में उसे प्रभु के साथ बिठाकर माफी मांग लेनी चाहिए।
37. बहुत जरूरी काम हो तो और बात है, नहीं तो सभा में नियम से हाजिरी देनी चाहिए।
38. अगर कोई 'मुक्त' उदास हुआ हुआ हो, जब तक कि वह उदासी से मुक्त होकर फिर से आनन्द में वापिस न आ जाए, तब तक उसके लिए 'सुहृद्' प्रार्थना करनी चाहिए।
39. भगवान स्वामिनारायण केवल स्व-भाव रहित भक्ति को ही स्वीकार करते हैं।
40. अपने सद्गुरु के पास निष्कपट रहना चाहिए।
41. अपना सारा दायित्व प्रभु के ऊपर डालकर, धीरज रखकर प्रार्थना करो और भगवान को काम करने दो।
42. प्रभु के सिवा और जहाँ-जहाँ वृत्ति रहती है, वह सब बाह्यदृष्टि है।
43. प्रभु प्राप्ति की मस्ती में मग्न रहो।
44. सम्बन्ध वाले भक्तों के प्रति व्यावहारिक ढंग से अभिप्राय बाँधने जैसा कोई पाप नहीं है, तो दूसरी-ओर उसे प्रभुस्वरूप मानने जैसा कोई पुण्य नहीं है।
45. अपने घर और मन को मन्दिर बनाओ।
46. किसी व्यक्ति में जो गुण या दोष तुम्हें दिखाई पड़ता है वह तुम्हारा अपना प्रतिबिम्ब है।
47. अपनी ओर साधु की दृष्टि और दूसरों की ओर प्रभु की दृष्टि रखनी चाहिए।

48. अपनी साधना का उद्देश्य प्राप्त करने के लिए—
असाधारण समझदारी
या
असाधारण प्रीति
या
असाधारण विश्वास
या
असाधारण माहात्म्य से प्रभु के 'प्रत्यक्ष स्वरूप' में खो जाओ।
49. सभी 'गुणातीत स्वरूपों' की एक ही महिमा समझना।
50. 'क्यों?—परन्तु—क्या—तो' किये बिना गुरु जैसा कहे वैसा कर लेना चाहिए।
51. गरज से सेवा करो और दिव्यभाव से सहन करो।
52. परमेश्वर के प्रत्यक्ष स्वरूप के प्रति एक निष्ठा रखो।
53. अच्छा चरित्र बनाना हमारे अपने हाथ में है।
54. प्रभु स्वामिनारायण के सभी भक्तों को प्रगति कर रहे चैतन्यों के रूप में मानना ही साधना की पूर्णाहूति है।
55. अपने स्वधर्म से जो विचलित हुआ और जिसने दूसरों से घृणा-द्वेष रखा वह माया के बंधन में फँसा। सो सजग रहना।
56. कष्टों को प्रभु का प्रसाद मानकर सहन कर लेने वाला व्यक्ति ही सच्चा साधक है।
57. यदि किसी की बुराई करने का विचार आ जाए तो 15 मिनट, बोल जाओ तो आधा घंटा और सुन लो तो एक घंटा धून्य 'जपयज्ञ' करना
58. अपने या दूसरों के गुण या दोष का चिन्तन नहीं करना चाहिए, केवल प्रभु का ही चिन्तन करना चाहिए।
59. गुणातीत समाज में जितने भक्त हैं इतने भगवान के स्वरूप हैं और जितने साधक हैं उतने अलग-अलग साधना के ढंग हैं। इसलिए किसी से भी घृणा की ही कैसे जा सकती है?
60. प्रभु के किसी भक्त के प्रति थोड़ा भी गलत भाव नहीं आने देना चाहिए। उससे छले जाकर या डरकर, हारकर रहना चाहिए; परन्तु उसके बारे में बकवास या दुष्प्रचार में पड़ना नहीं चाहिए।
61. प्रभु हमारे साथ ही हैं, सदा हाजिर ही हैं और हमें देख ही रहे हैं ऐसा मानकर क्रिया करना—यही है प्रभु के साथ का हमारा आंतरिक सम्बन्ध।
62. एक-दूसरे का सम्मान करना ही सच्ची आंतरिक विनम्रता है।
63. वर्तमान 'गुणातीत स्वरूप' का अभिप्राय क्या है? — किसी भी कीमत पर सब सत्संगियों में संप, सुहृद्भाव और एकता बनाए रखो।
64. हम घृणा, विक्षेप या उदासी के घेरे में से जितनी जल्दी बाहर निकल आयें, उतनी हमारी प्रगति मानी जायेगी।
65. जिसे प्रभु का वारिस बनना हो, उसे विनम्रता से सबका गुलाम बनना पड़ेगा।
66. प्रभु को कर्ता-हर्ता मानकर अपनी प्रार्थना और संकल्प का बल बढ़ाओ।
67. प.पू.बा. की आज्ञा के अनुसार आधा घंटा शांत मन से जपयज्ञ करना चाहिए।
68. प्रार्थना से प्रभु के साथ अपना सम्पर्क बनाए रखो। श्रद्धापूर्वक की हुई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं ही होगी।
69. 'प्रकृतिपुरुष' तक का—अच्छा या बुरा सब कुछ हँसकर टाल जाओ और हल्के फूल होकर 'अक्षरधाम' में रहो।

70. प्रत्येक घटना को स्थिर चित्त होकर देखो, प्रेम से स्वीकार करो और स्मित से जवाब दो।
71. प्रत्येक पल और प्रत्येक घटना को ब्रह्मनियंत्रित मानो।
72. स्वप्रयत्न से कोई दोषमुक्त-निर्दोष हुआ दिखाई नहीं पड़ता। भगवान और संत की कृपा से ही निर्दोष होना संभव है।
73. दूसरों के दोष देखना यानि उदासी को निमन्त्रण देना है।
74. 'गुणातीत ज्ञान' के अनुसार अन्तर की प्रार्थना से दूसरे साधक में प्रभु की रीत से जीने की प्रेरणा देना ही आध्यात्मिक जीत है।
75. बोलो कम, काम अधिक करो, उसका परिणाम ही तुम्हारे काम का प्रमाण होगा।



व्रतोत्सवसूची

1. दि.	2.11.91	शनिवार	एकादशी, व्रत
2. दि.	3.11.91	रविवार	धनत्रयोदशी
3. दि.	5.11.91	मंगलवार	दीपावली, लक्ष्मी-शारदा पूजन, श्री हनुमान जयंती
4. दि.	6.11.91	बुधवार	गोवर्धन पूजा, अशोकविहार मंदिर में अन्नकूटोत्सव, नूतन वर्ष प्रारम्भ
5. दि.	7.11.91	गुरुवार	भैयादूज
6. दि.	10.11.91	रविवार	गुरुहरि प.पू. पप्पाजी का अमृत महोत्सव-विद्यानगर
7. दि.	11.11.91	सोमवार	लाभ पंचमी
8. दि.	18.11.91	सोमवार	प्रबोधिनी एकादशी, व्रत
9. दि.	2.11.91	गुरुवार	पूर्णमा, देव दिवाली

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,

A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,

Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7128838

Printed at **R.P. Printers**, Shahadra, Delhi-110032